## अध्याय 4.

# तीर्थङ्कर

**1. तीर्थङ्कर किसे कहते हैं ?**

1. ''तरंति संसार महार्णवं येन तत् तीर्थम् '' अर्थात् जिसके द्वारा संसार सागर से पार होते हैं, वह तीर्थ है और इसी तीर्थ के प्रवर्तक तीर्थङ्कर कहलाते हैं।
2. धर्म का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र है। चूंकि इनके द्वारा संसार सागर से तरते हैं, इसलिए इन्हें तीर्थ कहा है और जो तीर्थ (धर्म) का उपदेश देते हैं, वे तीर्थङ्कर कहलाते हैं।

**2. तीर्थङ्कर कितने होते हैं ?**

वैसे तीर्थङ्कर तो अनन्त हो चुके, किन्तु भरत और ऐरावत क्षेत्र में अवसर्पिणी के चतुर्थ काल में एवं उत्सर्पिणी के तृतीय काल में (दुःषमा-सुषमा) क्रमशः एक के बाद एक चौबीस तीर्थङ्कर होते हैं।

**3. विदेहक्षेत्र में कितने तीर्थङ्कर होते हैं ?**

विदेहक्षेत्र में 20 तीर्थङ्कर तो विद्यमान रहते ही हैं, किन्तु 5 विदेहों में अधिक से अधिक 160 हो सकते हैं।

**4. चौबीस तीर्थङ्कर के चिह्न सहित नाम बताइए ?**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आदिनाथ जी | बैल /वृषभ | | 13. | विमलनाथ जी | सूकर | |
| 2. | अजितनाथ जी | हाथी | | 14. | अनन्तनाथ जी | सेही | |
| 3. | संभवनाथ जी | घोड़ा | | 15. | धर्मनाथ जी | वज्रदण्ड | |
| 4. | अभिनन्दन जी | बन्दर | | 16. | शान्तिनाथ जी | हिरण | |
| 5. | सुमतिनाथ जी | चकवा | | 17. | कुन्थुनाथ जी | बकरा | |
| 6. | पद्मप्रभ जी | लालकमल | | 18. | अरनाथ जी | मच्छ | |
| 7. | सुपार्श्वनाथ जी | स्वस्तिक | | 19 | मल्लिनाथ जी | कलश | |
| 8. | चन्द्रप्रभ जी | चन्द्रमा | | 20. | मुनिसुव्रतनाथजी | कछुआ | |
| 9. | पुष्पदंत जी | मगर | 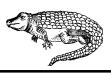 | 21. | नमिनाथ जी | नीलकमल | |
| 10. | शीतलनाथ जी | कल्पवृक्ष | | 22. | नेमिनाथ जी | शंख | |
| 11. | श्रेयांसनाथ जी | गेंडा | | 23. | पार्श्वनाथ जी | सर्प | |
| 12. | वासुपूज्य जी | भैंसा | | 24. | महावीरस्वामी | सिंह | |

**5. अढ़ाईद्वीप में एक साथ अधिक-से-अधिक कितने तीर्थङ्कर हो सकते हैं ?**

अढ़ाईद्वीप में एक साथ अधिक से अधिक 170 ( विदेह में 160, भरत में 5, ऐरावत में 5) तीर्थङ्कर हो सकते हैं।

**6. क्या कभी एक साथ 170 तीर्थङ्कर हुए थे ?**

सुनते हैं कि अजितनाथ तीर्थङ्कर के समय एक साथ 170 तीर्थङ्कर हुए थे।

**7. तीर्थङ्करों के कितने कल्याणक होते हैं ?**

तीर्थङ्करों के पाँच कल्याणक होते हैं। गर्भ, जन्म, दीक्षा या तप, केवलज्ञान और मोक्षकल्याणक।

**8. क्या भरत, ऐरावत एवं विदेह सभी जगह पाँच कल्याणक वाले तीर्थङ्कर होते हैं ?**

नहीं। भरत, ऐरावत में पाँच कल्याणक वाले ही तीर्थङ्कर होते हैं। किन्तु विदेहक्षेत्र में 2, 3 और 5 कल्याणक वाले भी होते हैं। दो में ज्ञान और मोक्ष कल्याणक, तीन में दीक्षा, ज्ञान और मोक्षकल्याणक होते हैं।

**9. तीर्थङ्कर की कौन-कौन सी विशेषताएँ होती हैं ?**

तीर्थङ्करों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है-

1. तीर्थङ्कर के दाढ़ी मूँछ नहीं होती हैं। (बोधपाहुड टीका, 32/98)
2. तीर्थङ्कर बालक माता का दूध नहीं पीते किन्तु सौधर्म इन्द्र जन्माभिषेक के बाद उनके दाहिने हाथ के अँगूठे में अमृत भर देता है जिसे चूसकर बड़े होते हैं।
3. जीवन भर (दीक्षा के पूर्व) देवों के द्वारा दिया गया ही भोजन एवं वस्त्राभूषण ग्रहण करते हैं।
4. तीर्थङ्कर स्वयं दीक्षा लेते हैं।
5. तीर्थङ्कर को बालक अवस्था में, गृहस्थ अवस्था में एवं मुनि अवस्था में भी मन्दिर जाना आवश्यक नहीं होता। उनका अन्य मुनि से, गृहस्थ अवस्था में साक्षात्कार भी नहीं होता।
6. तीर्थङ्करों के कल्याणकों के समय पर नारकी जीवों को भी कुछ क्षण के लिए आनन्द की अनुभूति होती है।
7. तीर्थङ्कर मात्र सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार करते हैं। अतः ''नमः सिद्धेभ्यः'' बोलते हैं।
8. तीर्थङ्करों में 46 मूलगुण होते हैं।

**10. तीर्थङ्करों के चिह्न कौन रखता है ?**

जब सौधर्म इन्द्र तीर्थङ्कर बालक का पाण्डुकशिला पर जन्माभिषेक करता है। उस समय तीर्थङ्कर के दाहिने पैर के अँगूठे पर जो चिह्न दिखता है, वह इन्द्र उन्हीं तीर्थङ्कर का वह चिह्न निश्चित कर देता है।

**11. कौन से क्षेत्र के तीर्थङ्कर का कौन-सी शिला पर जन्माभिषेक होता है ?**

भरतक्षेत्र के तीर्थङ्करों का पाण्डुकशिला पर, पश्चिम विदेह के तीर्थङ्करों का पाण्डु कम्बला शिला पर, ऐरावतक्षेत्र के तीर्थङ्करों का रक्त शिला एवं पूर्व विदेह के तीर्थङ्करों का रक्त कम्बला शिला पर जन्माभिषेक होता है। (त्रिलोकसार, 633-634)

**12. कौन से तीर्थङ्करों के शरीर का वर्ण कौन-सा था ?**

कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनचैत्य की पूजा के अर्घ्य में तीर्थङ्करों के शरीर का वर्ण इस प्रकार कहा है-

**द्वौ कुन्देदु-तुषार-हार-धवलौ, द्वाविन्द्रनील-प्रभौ,**
**द्वौ बन्धूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ, द्वौ च प्रियङ्गुप्रभौ।**
**शेषाः षोडश जन्म-मृत्यु-रहिताः संतप्त-हेम-प्रभास्,**
**ते संज्ञान-दिवाकराः सुर-नुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः॥**

किसी कवि ने तीर्थङ्करों के वर्ण के विषय निम्न प्रकार कहा है-

**दो गोरे दो सांवरे, दो हरियल दो लाल।**
**सोलह कंचन वरण हैं, तिन्हें नवाऊँ भाल॥**

**अर्थ**-

| | |
|---|---|
| चन्द्रप्रभ एवं पुष्पदन्त | सफेद वर्ण |
| मुनिसुव्रतनाथ एवं नेमिनाथ | श्याम वर्ण/नील वर्ण |
| पद्मप्रभ एवं वासुपूज्य | लाल वर्ण |
| सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ | हरित वर्ण |
| शेष सोलह तीर्थङ्करों का | पीत वर्ण |

**13. कौन से तीर्थङ्कर कहाँ से मोक्ष पधारे ?**

ऋषभदेव कैलाश पर्वत से, वासुपूज्य चम्पापुर से, नेमिनाथ गिरनार से, महावीर स्वामी पावापुर से एवं शेष तीर्थङ्कर तीर्थराज सम्मेदशिखर जी से मोक्ष पधारे।

**14. अ वर्ण से प्रारम्भ होने वाले तीर्थङ्करों के नाम बताइए ?**

आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनन्दननाथ, अनन्तनाथ, अरनाथ एवं अतिवीर।

**15. व वर्ण से प्रारम्भ होने वाले तीर्थङ्करों के नाम बताइए ?**

वृषभनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ और वर्द्धमान।

**16. श, स से प्रारम्भ होने वाले तीर्थङ्करों के नाम बताइए ?**

संभवनाथ, सुमतिनाथ, सुपार्श्वनाथ, सुविधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, शांतिनाथ एवं सन्मति।

**17. कितने तीर्थङ्करों के चिह्न एकेन्द्रिय हैं ?**

चार। पद्मप्रभ का कमल, चन्द्रप्रभ का चन्द्रमा, शीतलनाथ का कल्पवृक्ष[1] और नमिनाथ का नीलकमल।

**18. कौन से तीर्थङ्कर का चिह्न दो इन्द्रिय है ?**

तीर्थङ्कर नेमिनाथ का शंख चिह्न दो इन्द्रिय है।

**19. कितने तीर्थङ्करों के चिह्न अजीव हैं ?**

तीन। साँथिया, वज्रदण्ड और कलश।

**20. कितने तीर्थङ्करों के चिह्न पञ्चेन्द्रिय हैं ?**

शेष 16 तीर्थङ्करों के चिह्न पञ्चेन्द्रिय हैं।

**21. उन तीर्थङ्करों के चिह्न बताइए जो बोझा ढोने वाले पशु हैं ?**

---

1. ति.प., 4/358(यहाँ एकेन्द्रिय की सिद्धि के लिए प्रमाण दिया गया है)

वे चार तीर्थङ्करों के चिह्न हैं- बैल, हाथी, घोड़ा और भैंसा।

**22. उन तीर्थङ्करों के चिह्न बताइए जो जल में रहते हैं ?**

जल में रहने वाले - लालकमल, मगर, मछली, कछुआ, नीलकमल, शंख और सर्प चिह्न हैं।

**23. एक तीर्थङ्कर के उस चिह्न को बताइए जिसके शरीर में काँटे होते हैं ?**

सेही के शरीर में काँटे होते हैं।

**24. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न में सबसे तेज दौड़ने वाला प्राणी कौन-सा है ?**

हिरण सबसे तेज दौड़ने वाला प्राणी है।

**25. ऐसे कितने तीर्थङ्कर हैं, जिनके नाम जिस वर्ण ( अक्षर ) से प्रारम्भ होते हैं, उसी वर्ण से चिह्न प्रारम्भ होता है ?**

वृषभनाथ का वृषभ, सुपार्श्वनाथ का साँथिया, चन्द्रप्रभ का चन्द्रमा, नमिनाथ का नीलकमल और सन्मति का सिंह।

**26. ऐसे कौन से तीर्थङ्कर हैं जिनका जन्म उत्तम आकिञ्चन्य धर्म के दिन हुआ था ?**

वीर (महावीरस्वामी) का।

**27. कितने तीर्थङ्करों की बारात निकली थी ?**

बीस तीर्थङ्करों की।

**28. तीर्थङ्करों और सामान्य अरिहंतों में क्या अंतर है ?**

1. तीर्थङ्करों के कल्याणक होते हैं, सामान्य अरिहंतों के नहीं।
2. तीर्थङ्करों के चिह्न होते हैं, सामान्य अरिहंतों के नहीं।
3. तीर्थङ्करों का समवसरण होता है, सामान्य अरिहंतों के नहीं। उनकी गंधकुटी होती है।
4. तीर्थङ्करों के गणधर होते हैं, सामान्य अरिहंतों के नहीं।
5. तीर्थङ्करों को जन्म से ही अवधिज्ञान होता है, सामान्य अरिहंतों के लिए नियम नहीं है।
6. तीर्थङ्करों को दीक्षा लेते ही मनःपर्ययज्ञान होता है, सामान्य अरिहंतों के लिए नियम नहीं है।
7. तीर्थङ्कर अपनी माता की अकेली सन्तान होते हैं, सामान्य अरिहंतों के अनेक भाई-बहिन हो सकते हैं।
8. तीर्थङ्कर जब तक गृहस्थ अवस्था में रहते हैं तब तक उनके परिवार में किसी का मरण नहीं होता है किन्तु सामान्य अरिहंतों के लिए नियम नहीं है।
9. भाव पुरुषवेद वाले ही तीर्थङ्कर बनते हैं, किन्तु सामान्य अरिहंत तीनों भाववेद वाले बन सकते हैं।
10. तीर्थङ्करों के समचतुरस्र संस्थान ही होता है, किन्तु सामान्य अरिहंतों के छः संस्थानों में से कोई भी हो सकता है।
11. तीर्थङ्करों के प्रशस्त विहायोगति का ही उदय रहेगा, किन्तु सामान्य अरिहंतों के दोनों में से कोई भी हो सकता है।
12. तीर्थङ्करों के सुस्वर नामकर्म का ही उदय रहेगा, सामान्य अरिहंतों के दोनों में से कोई भी हो सकता है।

13. चौथे नरक से आने वाले तीर्थङ्कर नहीं बन सकते किन्तु सामान्य अरिहंत बन सकते हैं।
14. तीर्थङ्करों की माता को सोलह स्वप्न आते हैं, सामान्य अरिहंतों के लिए यह नियम नहीं है।
15. तीर्थङ्करों के श्रीवत्स का चिह्न नियम से रहता है, सामान्य अरिहंतों के लिए नियम नहीं है।
16. तीर्थङ्करों की दिव्यध्वनि नियम से खिरती है, सामान्य अरिहंतों के लिए नियम नहीं है। जैसे-मूक केवली की नहीं खिरती है।

**29. किन तीर्थङ्कर के साथ कितने राजाओं ने दीक्षा ली थी ?**

ऋषभदेव के साथ 4000 राजाओं ने, वासुपूज्य के साथ 676 राजाओं ने, मल्लिनाथ एवं पार्श्वनाथ के साथ 300-300 राजाओं ने, भगवान् महावीर ने अकेले एवं शेष तीर्थङ्करों के साथ 1000-1000 राजाओं ने दीक्षा ली थी। (ति.प., 4/675-76)

**30. कौन से तीर्थङ्कर ने कौन सी वस्तु से प्रथम पारणा की थी ?**

ऋषभदेव ने इक्षु रस से एवं शेष सभी तीर्थङ्करों ने क्षीरान्न अर्थात् दूध व अन्न से बने अनेक व्यञ्जनों की खीर आदि से पारणा की थी।

**31. तीर्थङ्करों की पारणा कराने वाले दाताओं के शरीर का रङ्ग कौन-सा था ?**

आदि के दो दाता राजा श्रेयांस, राजा ब्रह्मदत्त सुवर्ण के और अंत के दो दाता राजा ब्रह्मदत्त और राजाकूल/नन्दन श्यामवर्ण के थे। अन्य सभी दाता तपाये हुए सुवर्ण के समान पीत वर्ण वाले थे।

**32. कौन से तीर्थङ्कर किस आसन से मोक्ष पधारे ?**

वृषभनाथ, वासुपूज्य और नेमिनाथ (1,12, 22) तो पद्मासन एवं शेष सभी तीर्थङ्कर कायोत्सर्गासन (खड्गासन) से मोक्ष पधारे थे, किन्तु समवसरण में सभी तीर्थङ्कर पद्मासन से ही विराजमान होते हैं।

**33. ऐसे तीर्थङ्कर कितने हैं, जिनके समवसरण में मुनियों से आर्यिकाएँ कम थीं ?**

धर्मनाथ एवं शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के समवसरण में मुनियों से आर्यिकाएँ कम थीं।

**34. कौन से तीर्थङ्कर के समवसरण का कितना विस्तार था ?**

वृषभनाथ का 12 योजन एवं आगे-आगे नेमीनाथ तक प्रत्येक तीर्थङ्कर में $^1/_2$ योजन घटाते जाना है एवं पार्श्वनाथ एवं महावीर में $^1/_4$ योजन, $^1/_4$ योजन घटाना है। तब पार्श्वनाथ का 1.25 योजन एवं महावीरस्वामी का 1 योजन का था। (ति.प., 4/724-25)

**नोट**- 4 कोस=1 योजन, 2 मील=1 कोस एवं 1.5 किलोमीटर का 1 मील अर्थात् 1 योजन में 12 किलोमीटर होते हैं।

**35. किन तीर्थङ्कर ने योग निरोध करने के लिए कितने दिन पहले समवसरण छोड़ा था ?**

ऋषभदेव ने 14 दिन पहले, महावीरस्वामी ने 2 दिन पहले एवं शेष सभी तीर्थङ्करों ने 1 माह पहले योग निरोध करने के लिए समवसरण छोड़ दिया था।

**36. सबसे कम समय में कौन से तीर्थङ्कर को केवलज्ञान हुआ था ?**

मल्लिनाथ को मात्र 6 दिनों में केवलज्ञान हुआ था।

**37. कौन से तीर्थङ्कर को सबसे अधिक दिनों में केवलज्ञान हुआ था ?**

ऋषभदेव को 1000 वर्ष में केवलज्ञान हुआ था।

**38. सबसे कम गणधर कौन से तीर्थङ्कर के थे ?**

सबसे कम मात्र 10 गणधर पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर के थे।

**39. सबसे अधिक गणधर कौन से तीर्थङ्कर के थे ?**

सबसे अधिक 116 गणधर सुमतिनाथ तीर्थङ्कर के थे।

**40. सभी तीर्थङ्करों के कुल कितने गणधर थे ?**

सभी तीर्थङ्करों के कुल 1452 गणधर थे।

**41. सबसे ज्यादा शिष्य मण्डली कौन से तीर्थङ्कर की थी ?**

सबसे ज्यादा शिष्य मण्डली पद्मप्रभ की 3,30,000 थी।

**42. तीर्थङ्कर के सहस्र नामों से स्तुति किसने कहाँ पर की थी ?**

सौधर्म इन्द्र ने तीर्थङ्कर की स्तुति केवलज्ञान होने के बाद समवसरण में की थी।

**43. पाँच बाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्करों के नाम कौन-कौन से हैं ?**

वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर।

**44. तीन पदवियों से विभूषित तीर्थङ्करों के नाम ?**

शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ। ये तीनों तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती एवं कामदेव तीनों पदों के धारक थे।

**45. किन तीर्थङ्करों पर मुनि अवस्था में उपसर्ग हुआ था ?**

सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर।

**46. जिसने तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध किया वह जीव किस भव में मोक्ष चला जाएगा ?**

दो, तीन कल्याणक वाले उसी भव से एवं पाँच कल्याणक वाले तीसरे भव से मोक्ष चले जाएंगे।

**47. तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध कौन कहाँ करता है ?**

कर्मभूमि का मनुष्य केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में सोलहकारण भावना तथा विश्व कल्याण की भावना भाता हुआ तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध करता है।

**48. तीर्थङ्कर चौबीस ही क्यों होते हैं ?**

आचार्य सोमदेव से जब यह प्रश्न किया गया तो उनका उत्तर था ''इस मान्यता में कोई अलौकिकता नहीं है, क्योंकि लोक में अनेक ऐसे पदार्थ हैं जैसे-ग्रह, नक्षत्र, राशि, तिथियाँ और तारागण जिनकी संख्या काल योग से नियत हैं।'' तीर्थङ्कर सर्वोत्कृष्ट होते हैं। अतः उनके जन्म काल योग भी विशिष्ट उत्कृष्ट ही होना चाहिए या होते हैं। ज्योतिषाचार्यों का (जिनमें स्व. डॉ. नेमीचन्द आरा भी थे) मत है कि एक कल्प के दुःषमा-सुषमा काल में ऐसे उत्तम काल योग 24 ही पड़ते हैं, जिनमें तीर्थङ्करों का जन्म होता है या हो सकता है। विष्णु के भी अवतार 24 ही हैं, बौद्धों ने भी 24 बुद्ध और ईसाइयों ने भी 24 ही पुरखे स्वीकार किए हैं।

**49. तीस चौबीसी के 720 तीर्थङ्कर कैसे कहे जाते हैं ?**

अढ़ाई द्वीप में 5 भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र = कुल 10 क्षेत्र हैं। इनमें प्रत्येक क्षेत्र में तीनों कालों के 72-

72 तीर्थङ्कर होते हैं। अतः 10 क्षेत्रों के तीनों काल सम्बन्धी 720 तीर्थङ्कर कहे जाते हैं।

## अभ्यास

**सही या गलत बताइए-**

1. विदेह क्षेत्र में बीस से ज्यादा तीर्थङ्कर नहीं होते हैं।
2. विदेह क्षेत्र में पाँच कल्याणक वाले तीर्थङ्कर नहीं होते हैं।
3. तीर्थङ्कर मात्र एक परमेष्ठी को नमस्कार करते हैं।
4. पश्चिम विदेह के तीर्थङ्करों का जन्माभिषेक पाण्डुक शिला पर होता है।
5. शांतिनाथ तीर्थङ्कर का समवसरण 4.5 योजन विस्तार वाला था।
6. तीर्थङ्कर के एक भाई होते हैं।
7. लवण समुद्र में 34 तीर्थङ्कर हो सकते हैं।
8. मल्लिनाथ तीर्थङ्कर एक पद के धारी थे।
9. सबसे ज्यादा गणधर पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर के थे।
10. सबसे ज्यादा शिष्य मण्डली पद्मप्रभ तीर्थङ्कर की थी।

**अन्यत्र खोजिए-**

1. एक और चार कल्याणक वाले तीर्थङ्कर क्यों नहीं होते ?
2. कौन से आचार्य ने सुपार्श्वनाथ का चिह्न नद्यावर्त एवं शीतलनाथ का स्वस्तिक चिह्न बताया है ?
3. तीर्थङ्करों के रंग के अनुसार चौबीसी किस क्षेत्र में है ?
4. तीर्थङ्करों का केवलज्ञान के साथ जघन्य एवं उत्कृष्ट काल कितना है ?
5. तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध कम-से-कम कितनी आयु में प्रारम्भ हो सकता है ?
6. कौन-कौन सी लेश्याओं के साथ तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध होता है ?
7. कौन से सम्यग्दर्शन के साथ तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध होता है ?
8. भूतकाल एवं भविष्यकाल के तीर्थङ्करों के नाम खोजें ?
9. तीर्थङ्कर बनने में निमित्त सोलहकारण भावनाओं के नाम व उनकी परिभाषा क्या है ?